

गर्मियों में गर्भवती पशुओं की देखभाल कैसे करें

कुलदीप सिंह गुर्जर, प्रिया खण्डेलवाल

पशु चिकित्सा नैदानिक परिसर (अपोलो पशुचिकित्सा उपचार महाविद्यालय, जयपुर)

[DOI:10.5281/Vettoday.15721484](https://doi.org/10.5281/Vettoday.15721484)

परिचय—गर्भवती गाय और भैंस हमारे पशुधन का भविष्य हैं। यदि गर्मियों में इनकी सही देखभाल की जाए, तो न केवल स्वस्थ बछड़ा प्राप्त होता है बल्कि भविष्य में अच्छे दूध उत्पादन की भी नींव रखी जाती है। लेकिन जैसे ही गर्मी का मौसम आता है, गर्भवती पशु कई तरह की समस्याओं से जूझने लगती हैं इनकी सही देखभाल से गर्भपात होने की संभावना एवं प्रसव के समय जटिलताओं से बचा जा सकता है। आइए जानें गर्मियों का उनके स्वास्थ्य पर क्या असर होता है और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए क्या करना चाहिए।

गर्मियों के मौसम में क्या बदलाव होता है— गर्मियों में तापमान बहुत अधिक हो जाता है, कहीं-कहीं 45 डिग्री सेल्सियस तक भी पहुँच जाता है। इस तेज गर्मी और लू का असर सिर्फ इंसानों पर ही नहीं, बल्कि जानवरों पर भी पड़ता है खासतौर पर गर्भवती पशुओं पर।

गर्भवती पशु पर गर्मियों के प्रभाव

हीट स्ट्रेस (गर्मी की मार)—गर्मियों में तापमान 40° C से ऊपर चला जाता है, जिससे गर्भवती पशु को हीट स्ट्रेस होता है। इससे पशु का पाचन तंत्र धीमा हो जाता है, चारा कम खाती है, और कमजोरी आ जाती है।

भूख में कमी—अत्यधिक गर्मी के कारण पशु की भूख कम हो जाती है, जिससे वह पर्याप्त पोषण नहीं ले पाती। गर्भस्थ बछड़े का विकास भी प्रभावित हो सकता है।

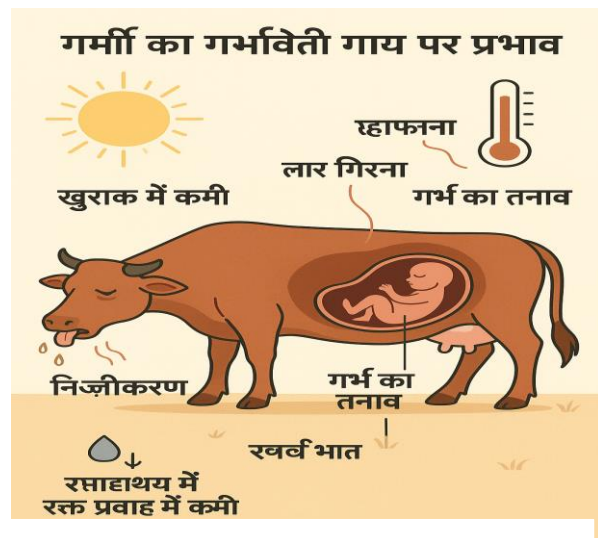
पानी की कमी और निर्जलीकरण—यदि पर्याप्त और ठंडा पानी नहीं मिले तो पशु डिहाइड्रेट हो जाती है। इससे दूध उत्पादन घटता है और गर्भ में पल रहे बछड़े पर बुरा असर पड़ सकता है।

गर्भपात का खतरा—अत्यधिक गर्मी और तनाव के कारण कुछ मामलों में गर्भपात होने की संभावना भी बढ़ जाती है। दूध उत्पादन में

कमी—शरीर में पोषण की कमी और गर्मी के कारण बछड़े के जन्म के बाद दूध उत्पादन कम हो सकता है।

संक्रमण और बीमारियों का खतरा—गर्मियों में शेड में साफ-सफाई न होने से फफूंदी, मक्खी-मच्छर और कीटाणु तेजी से बढ़ते हैं। इससे गर्भवती पशु को स्किन इंफेक्शन, थनैला (मास्टाइटिस) या दूसरे रोग लग सकते हैं।

थकान और सुस्ती—गर्म मौसम पशु को थका हुआ और सुस्त बना देता है, जिससे वह कम चलती-फिरती है और प्रसव में भी दिक्कतें



छाया चित्र: गर्भित पशु पर गर्मी का प्रभाव

गर्भवती पशु की देखभाल के लिए जरूरी सुझाव

आहार सामग्री	हरा चारा	सूखा भूसा	संकेंद्रित आहार	खनिज मिश्रण	नमक
मात्रा	15 - 20 किलोग्राम	4 - 5 किलोग्राम	3 - 4 किलोग्राम	50 ग्राम	30 ग्राम

आती हैं।

आवास प्रबंधन- पशु को ऐसे स्थान पर रखें जहाँ पशुओं के लिए पर्याप्त स्थान एवं दिनभर छाया और अच्छी हवा का संचार हो। इसके लिए घने पेड़ एवं ऊंचे शेड जिनमें पंखे, कूलर व उचित वेंटिलेशन की व्यवस्था हो पशुशाला का फर्श सुखा और साफ रखें जिससे फर्श में नमी नहीं आएगी गीला फर्श नमी बढ़ाएगा जिससे उमस और गर्मी बढ़ेगी। फर्श को समय समय पर धोए और कीटाणु रहित करे एक स्थान पर बहुत सारे जानवर नहीं रखे जिससे गर्मी बढ़ती है उनको घूमने फिरने के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए पशुओं को दिन के सबसे गर्म समय में (दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक) बाहर चराने से बचे।

पर्याप्त पानी की व्यवस्था- गर्मियों में पानी की आवश्यकता दुगने तक बढ़ सकती है इसके लिए पानी के बर्तन पर्याप्त मात्रा में हो एवं उनकी साफ सफाई भी नियमित होनी चाहिए। गर्मियों में गर्भवती पशु को 75-80 लीटर ताजा और साफ पानी प्रतिदिन पिलाएं। पानी पीने की व्यवस्था 24 घंटे उपलब्ध होनी चाहिए।

संतुलित पोषण- पशु के आहार में हरा चारा (जैसे बर्सीम, जई, लूसर्न), सूखा भूसा और संकेंद्रित आहार संतुलित मात्रा में देना चाहिए। एवं चारा डालने का समय सुबह जल्दी अथवा शाम देर से होना चाहिए पशुओं को चारा कम कम मात्रा में डाले तथा पानी ज्यादा मात्रा में पिलाए। खनिज मिश्रण (50 ग्राम) और नमक

(30 ग्राम) रोजाना खिलाएं क्योंकि गर्मियों में पसीने के रूप में मिनरल्स की कमी हो सकती है। गर्भ के अंतिम 3 महीनों में आहार में प्रोटीन और ऊर्जा की मात्रा बढ़ा दें।

गर्भवती पशु के दैनिक आहार की अनुशंसित मात्रा

ध्यान रखने योग्य अन्य महत्वपूर्ण बातें- 6-7 महीने की गर्भवती हीफर के शरीर, पीठ और थनों की रोजाना हल्के हाथों से मालिश करें। ठंडे पानी से सुबह और शाम नहलाने से शरीर का तापमान संतुलित रहता है। और शरीर की सफाई का विशेष ध्यान रखें। गर्मियों के दौरान गर्भित पशुओं को ज्यादा दूरी तक नहीं ले कर जाए एवं उनको तेज दौड़ने से भी बचना चाहिए ये सब तनाव पैदा करते हैं। गर्मियों के गर्भित पशु की योनिद्वार से किसी भी तरह का स्राव देखने पर अपने आस पास के पशुचिकित्सक से संपर्क करे क्योंकि ये बहुत ज्यादा गर्मी के कारण गर्भपात का कारण बन सकता है। गर्भकाल के अंतिम दिनों में प्रसव से 4-5 दिन पहले पशु को अलग साफ-सुथरे स्थान पर रखें, जहाँ धूप और रोशनी की पूरी व्यवस्था हो। फर्श पर पुआल बिछाएँ और रात के समय के लिए बिजली की व्यवस्था रखें। ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर पशु को ना ले जाएँ और चराई के लिए दूर न ले जाएँ।

अंतिम सलाह

गर्भवती पशु की देखभाल एक जिम्मेदारी है, जिसमें लापरवाही से पशु और उसके बछड़े दोनों के जीवन को खतरा हो सकता है। गर्मियों में विशेष ध्यान देकर हम उन्हें स्वस्थ रख सकते हैं और भविष्य में अच्छा दूध उत्पादन और स्वस्थ बछड़ा प्राप्त कर सकते हैं। याद रखें, स्वस्थ माँ ही स्वस्थ बछड़े और अच्छे दूध उत्पादन की गारंटी है।

"स्वस्थ माँ, स्वस्थ बछड़ा — यही पशुपालन की असली सफलता है!"